ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या-१०
दिनांक- शुक्रवार, ०३ फरवरी, २०२३

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 22.5 एवं 11.3 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 97 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 64 प्रतिशत, हवा की औसत गति 6.3 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 2.3 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 4.2 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 15.3 एवं दोपहर में 27.4 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(04–08 फरवरी, 2023)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 04–08 फरवरी, 2023 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्रायः साफ तथा मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है।
- पूर्वानुमान की अवधि में अधिकतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 10 से 13 डिग्री सेल्सियस के बीच बने रहने का अनुमान है।
- सतही हवा की रफ्तार थोड़ा अधिक रह सकता है यह 11–14 किलोमीटर प्रति घंटा की दर से चल सकती है। हवा की दिशा पछिया रहने की सम्भावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 60 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- इस समय आम एवं लीची में मंजर आने की संभावना अधिक रहती है। अतः किसान भाई अपने आम एवं लीची के बागानों में किसी भी प्रकार का कर्षण क्रिया नहीं करें। इन बगानों में जहाँ दीमक की समस्या हो, क्लोरपाईरिफॉस 20 ई0सी0/2.5 मी0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर मुख्य तने एवं उसके आस–पास की मिट्टी में छिड़काव करने से दीमक की उग्रता में कमी आती है। मधुआ एवं दहिया कीटों का प्रकोप कम करने के लिए वृक्षों में इमिडाक्लोप्रीड 17.8 एस0एल0 अथवा साइपरमेथ्रीन 10 ई0सी0/1.0 मी0ली0/ली0 पानी की दर से घोल बनाकर समान रुप से छिड़काव करें। घुलनषील गंधक (सल्फर) 80 डब्लू0पी0/2 ग्रामध्लीटर पानी की दर से घोल कर पत्तियों पर समान रुप छिड़काव करने से आने वाले समय में पौउड्री मिल्डेव की उग्रता में कमी आती है।
- ऐसे बाग जिसमें निकट भविष्य में फूल आनेवाले हो उसमें इमिडाक्लोप्रीड (17-8 SL)@0.5 मिली/लीटर एवं हेक्सा कॉनाजोल (हेककॉनाजोल) 1 मिलीलीटर/लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से क्रमशः हापर एवं चूर्णिल आसिता के साथ साथ अन्य फफूंद जनित रोगों की उग्रता में कमी आती है।
- केला की सुखी एवं रोगग्रस्त पत्तियों को काटकर खेत से बाहर करें जिससे रोग की उग्रता में कमी आयेगी। हल्की गुड़ाई करने के बाद प्रति केला 200 ग्राम यूरिया, 200 ग्राम म्यूरेट आफ पोटाश एवं 100 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट का प्रयोग करें।
- गरमा मौसम की सब्जियों की बुआई के लिए मौसम अनुकुल है। जिन किसान भाईयों की खेत की तैयारी हो चुकी है बुआई शुरु कर सकते हैं तथा जिन किसानों का खेत तैयार नही है वैसे किसान भाई खेतों की तैयारी करें। 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से गोबर खाद की मात्रा पूरे खेत में अच्छी प्रकार बिखेरकर मिला दें। कजरा (कटुआ) पिल्लू से होने वाले नुकसान से बचाव हेतु खेत की जुताई में क्लोरपायरीफॉस 20 ई0सी0 दवा का 2 लीटर प्रति एकड़ की दर से 20–30 किलो बालू में मिलाकर व्यवहार करें। सब्जियों में निकाई–गुड़ाई एवं आवष्यकतानुसार सिंचाई करें। शुष्क मौसम की संभावना को देखते हुए किसान हल्दी एवं ओल की तैयार फसलों की खुदाई प्राथमिकता से करें।
- पपीता की खेती करने वाले किसान भाईयों को सलाह दी जाती है कि 10 से 15 फरवरी तक नर्सरी की तैयारी कर बीज की बुआई कर दें। अन्यथा देर होने की स्थिति में बढ़ते तापमान के कारण रोपनी के समय पौधे पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है।
- आलू की अगात प्रभेद की तैयार फसलों की खुदाई कर लें। बीज वाली फसल की ऊपरी लत्ती की कटाई कर लें तथा खुदाई के 15 दिनों पूर्व सिंचाई बन्द कर दें। पिछात आलू की फसल में कटवर्म या कजरा पिल्लू की निगराणी करें। आलू की फसल में शुरुआती अवस्था से कंद बनने की अवस्था तक यह कीट फसल को नुकसान पहुँचाती है। उपचार हेतु क्लोरपायरीफॉस 20 ई0सी0 दवा का 2.5 से 3 मि0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- मटर में फली छेदक कीट की निगरानी करें। इस कीट के पिल्लू फलियों में जालीनूमा आवरण बनाकर उसके नीचे फलियों में प्रवेष कर अन्दर ही अन्दर मटर के दानो को खाती रहती हैं। एक पिल्लू एक से अधिक फलियों को नष्ट करता है। अकान्त फलियॉं खाने योग्य नही रह जाती, जिससे उपज में अत्यधिक कमी आती है। कीट प्रबन्धन हेतु प्रकाष फंदा का उपयोग करें। 15–20 टी आकार का पंछी वैठका (वर्ड पर्चर) प्रति हेक्टर लगावे। अधिक नुकसान होने पर क्वीनालफास 25 ई0 सी0 या नोवाल्युरॉन 10 ई0 सी0 का 1 मि0 ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करें।
- अरहर की फसल में फल मक्खी कीट की निगरानी करे। इस कीट के मैगट बीजों को खाते है। जिस स्थानों पर मैगट खातें है, वहॉं कवक एवं जीवाणु उत्पन हो जाते है। फलस्वरूप ऐसे दाने खाने योग्य नही रह जाते है और उपज में काफी कमी आती है। इस कीट से बचाव के लिए करताप हाईड्रोक्लोराइड दवा 1.5 मि0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें।
- रवी मक्का की फसल जिसमें धनबाल एवं मोचा आ गई हो, में सिंचाई कर 40 किलोग्राम नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेषन करें।
- लहसुन एवं अगात बोयी गई प्याज की फसल में थ्रिप्स कीट की निगरानी करें। थ्रीप्स की संख्या अधिक पाये जाने पर प्रोफेनोफॉस 50 ई0सी0 दवा का 1.0 मि0ली0 प्रति लीटर पानी या इम्डिाक्लोप्रिड दवा का 1.0 मी.ली. प्रति 4 लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें। अच्छे परिणाम हेतु चिपकाने वाला पदार्थ जैसे टीपोल 1.0 मी.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल में मिलावें। प्याज के पौध की रोपाई अतिशीघ्र समाप्त करें।

आज का अधिकतम तापमानः 23.6 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 0.7 डिग्री सेल्सियस कम	आज का न्यूनतम तापमानः 8.1 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.0 डिग्री सेल्सियस कम

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी (कृषि मौसम)

(डॉ0 ए. सत्तार)
वरीय वैज्ञानिक सह नोडल पदाधिकारी (कृषि मौसम)